E-Learning material prepared by Dr. Dhananjay Vasudeo Dwivedi, Assistant Professor, Department of Sanskrit, Dr. Shyama Prasad Mukherjee University, Ranchi

कालिदास की भाषा और शैली

डा० धनञ्जय वासुदेव द्विवेदी

सहायक प्रोफेसर, संस्कृत विभाग,

डा० श्यामा प्रसाद मुखर्जी विश्वविद्यालय, राँची

विश्व-साहित्य में विख्यात अभिज्ञानशाकुन्तलम् नामक नाटक में कविकुलकलाधर महाकवि कालिदास ने अपने नाट्य कौशल का प्रकर्ष दिखाया है। महाकवि कालिदास को संस्कृत साहित्य का सर्वश्रेष्ठ कवि माना जाता है।

काव्यजगत् में महाकवि कालिदास की लोकप्रियता का प्रधान कारण उनकी परिष्कृत, प्रसादगुणमयी सरल शैली ही है। कालिदास वैदर्भी रीति के सर्वश्रेष्ठ कवि माने जाते हैं- "वैदर्भीरीतिसन्दर्भे कालिदासो विशिष्यते"। शब्द-माधुर्य, रचना-लालित्य तथा समस्त पदों की स्वल्पता ही वैदर्भी रीति की विशेषताएँ हैं-

"माधुर्यव्यञ्जकैर्वर्णं रचना ललितात्मिका।

अवृत्तिरल्पवृत्तिर्वा वैदर्भी रीतिरिष्यते"।।

कालिदास की शैली की मुख्य विशेषतायें निम्नाङ्कित हैं-

१. कालिदास की शैली अत्यन्त परिष्कृत है। उसमें रसानुकूल मधुर शब्दों का प्रयोग है। वाक्य छोटे होते हुए भी भावाभिव्यक्ति में सर्वथा समर्थ हैं। अभिज्ञानशाकुन्तलम् में सौन्दर्य वर्णन आदि के अवसर पर भाव अथवा प्रसङ्ग के अनुकूल कवि ने कोमलकान्त पदावली का प्रयोग किया है। उदाहरण के रूप में यहाँ कुछ श्लोक प्रस्तुत हैं-

सरसिजमनुविद्धं शैवलेनापि रम्यं मलिनमपि हिमांशोर्लक्ष्म लक्ष्मीं तनोति।

इयमधिकमनोज्ञा वल्कलेनापि तन्वी किमिव हि मधुराणां मण्डनं नाकृतीनाम्।।

पुनश्च

अनाघ्रातं पुष्पं किसलयमलूनं कररुहैरनाविद्धं रत्नं नवमनास्वादितरसम्।

अखण्डं पुण्यानां फलमिव च तद्रूपमनघं न जाने भोक्तारं कमिह समुपस्थास्यति विधिः।।

२. उनकी शैली में प्रसाद, माधुर्य एवं ओज सभी विराजमान हैं, पर प्रसाद और माधुर्य गुण का ही बाहुल्य है। उदाहरणार्थ कुछ श्लोक प्रस्तुत हैं-

शान्तमिदमाश्रमपदं स्फुरति च बाहुः कुतः फलमिहास्य।

अथवा भवितव्यानां द्वाराणि भवन्ति सर्वत्र।।

पुनश्च

अधरः किसलयरागः कोमलविटपानुकारिणौ बाहू।

कुसुममिव लोभनीयं यौवनमङ्गेषु सन्नद्धम्।।

३. कालिदास की शैली अत्यन्त संक्षिप्त ध्वन्यात्मक है। वे अपने वर्ण्य विषय का विस्तृत वर्णन न करके सूक्ष्म रूप में ही उसकी व्यञ्जना कराते हैं।

४. कालिदास की शैली की यह भी विशेषता है कि उन्होंने अपने काव्यों में ऐसे अनेक वाक्यों का प्रयोग किया है जिनमें जीवन की सच्चाई और अनुभूति भरी हुई है। इसके लिये काव्यगत सूक्तियाँ ली जा सकती हैं।

५. कालिदास की शैली की सबसे बड़ी विशेषता है उसकी ध्वन्यात्मकता जिससे भविष्य में घटित होने वाली घटनाओं की सूचना मिल जाती है। शाकुन्तल के निम्नांकित स्थल एतदर्थ द्रष्टव्य हैं- 'दिवसाः परिणामरमणीयाः', 'यात्येकतोऽस्तशिखरं....' आदि। महाकवि कालिदास किसी भी बात का लम्बा-चौड़ा वर्णन न करके सूक्ष्म और मार्मिक रूप में उसकी व्यञ्जना कर देता है। विषय को मार्मिक ढंग से जिस रूप में जितना रखना अत्यावश्यक है, उतना ही प्रस्तुत करते हैं, अधिक नहीं।

६. महकवि कालिदास वर्णन में असाधारण कुशल हैं। वे प्रत्येक वस्तु का सजीव-सा वर्णन करते हैं। जहाँ पर जैसा भाव है, वहाँ पर उसकी भाषा उसी प्रकार की है। वे प्रकृति के वर्णन में बहुत पटु हैं। उन्होंने वृक्षों, वनस्पतियों, पशु-पक्षियों, पर्वत, नदी, तालाबब सभी का सुन्दर वर्णन किया है।

७. अभिज्ञानशाकुन्तलम् में संवाद संक्षिप्त, सरल और रोचक हैं। इस नाटक में महाकवि कालिदास ने संवादों में अनावश्यक विस्तार का सर्वथा परित्याग किया है।

८. महाकवि कालिदास ने अलंकारों का बहुत सुन्दरता से प्रयोग किया है।प्रायः सभी अलङ्कार प्रकृत नाटक में प्राप्त होता है। उपमा के प्रयोग में वे अद्वितीय निपुण हैं। उनकी उपमाएं बलात् मन को हर लेती हैं। वे अर्थान्तरन्यास के प्रयोग में भी सिद्धहस्त हैं।

भाषा

१. कालिदास का भाषा पर पूर्ण अधिकार है। उनकी भाषा परिमार्जित एवं परिष्कृत है। उनका शब्दकोश अगाध है। वह प्रत्येक स्थान पर ऐसे ही शब्दों का प्रयोग करते हैं, जो उस स्थन पर अत्यन्त उचित और सार्थक प्रतीत होते हैं। भाषा और शब्दकोश पर अधिकार होने से उनकी भाषा में असाधरण मनोरमता और प्रवाह है।

२. महाकवि कालिदास पात्रों के अनुकूल भाषा का प्रयोग करने में अत्यन्त पटु हैं। जो पात्र जिस कोटि का है वह वैसी ही भाषा में अपने भाव का प्रकाशन करता है। प्रियंवदा और अनुसूया शकुन्तला से सखियों के अनुरूप हास्य आदि करती हैं। कण्व की भाषा ऋषि के अनुरूप है। वे पिता के तुल्य पुत्री शकुन्तला को उपदेश देते हैं।विदूषक की उक्तियाँ उसके पेटूपन स्वभाव के अनुरूप हैं। राजा राजाओं के दुःख का वर्णन करता है कि उन्हें कभी शान्ति नहीं मिलती। बालक सर्वदमन की बातें बच्चों की सी हैं।

३. कालिदास की भाषा में अप्रचलित शब्दों का अभाव है। उनकी भाषा प्राञ्जल तथा परिष्कृत है। मुहावरों के प्रयोग से उनके वाक्य अत्यधिक स्वाभाविक एवं प्रभावशाली हो जाते हैं।

४. कालिदास की भाषा सरल, सरस और मनोरम है। लम्बे सामासिक पदों का प्रयोग प्रायः नहिम किया गया है। जहाँ पर समास हैं, वहाँ पर भी थोड़े ही पदों का समास है।पाण्डित्य प्रदर्शन का सर्वथा परित्याग है। अतः अभिज्ञानशाकुन्तलम् में क्लिष्ट रचना, क्लिष्ट कल्पना और दुरूह प्रयोगों का अभाव है।

५. कालिदास के वाक्य छोटे और सारगर्भित होते हैं। भावों की अभिव्यक्ति में वे पूर्णरूपेण समर्थ होते हैं। उनकी भाषा में सरलता तथा मनोहरता के भी दर्शन होते हैं।

६. कालिदास की भाषा में समाहार शक्ति है। वे नपी-तुली भाषा में भावों की व्यञ्जना कराने में पटु हैं-'अये लब्धं नेत्र निर्वाणम्', 'मधुरमासां दर्शनम्', 'श्रुतं श्रोतव्यम्' आदि स्थल इसके प्रमाण हैं।

७. भाषा की ध्वन्यात्मकता कालिदास की ऐसी विशेषता है जो उन्हें अन्य कवियों से पृथक् कर देती है। 'अयं जनः कस्य हस्ते समर्पितः', 'तव न जाने हृदय.....' आदि में उनकी यह विशेषता परिलक्षित होती है।